ISSN 2349-9273

The Gunjan

Multi Disciplinary Quarterly International Refereed Research Journal

Super Prakashan Present's

Vol. 4, Issue 14, January - March, 2018

An International Refereed Research Journal of Humanities, Arts, Social Studies, Commerce and Science.

Chief Editor :
Dr. Shashi Rani Awasthi

Editor :
Dr. Mohini Shukla

वर्ष 4, अंक 14

डिसिप्लनरी क्वाटरली इण्टरनेशनल रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

वर्ष 4, अंक 14, जनवरी - मार्च, 2018

RNI : APPLIED-78/JA/2014 ISSN : 2349-9273

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण शिक्षा एक चुनौती

- डॉ. स्नेह पाण्डेय
प्रवक्ता - शिक्षाशास्त्र विभाग,
दयानन्द गर्ल्स (पी. जी.) कालेज,
कानपुर-208001 (उत्तर प्रदेश)

सारांश

वर्तमान समय में विश्व के सामने उदित होने वाली प्रमुख समस्याओं में पर्यावरण के असंतुलन की समस्या अत्यन्त ही ज्वलन्त है। सभी राष्ट्र पर्यावरण असंतुलन की वीभत्स विभीषिका को देखते हुए मानव जगत प्राणि-जगत के अस्तित्व के प्रति अत्यन्त चिन्तित है। प्रत्येक प्राणी एवं मनुष्य पर्यावरण का ही एक अंश है। उसके निर्माण में पंच भौतिक तत्वों-क्षिति, जल, पावक, गगन और समीर का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसके अतिरिक्त वन-वनस्पति, पेड़-पौधे भी मानव अस्तित्व के लिये विशेष सहायक होते है। इन सबके सामूहिक सम्मेलन से ही पर्यावरण का सृजन होता है। पर्यावरण के उपरोक्त कारकों में कुछ इस तरह का आपसी सन्तुलन और तालमेल होता है कि प्रत्येक प्राणी को शुद्ध जल, हवा एवं अन्य आवश्यक खनिजों की प्राप्ति होती रहती है। और उसका जीवन संतुलनमय होकर चलता रहता है किन्तु वर्तमान समय में पर्यावरण का निर्माण करने वाले कारकों में स्थापित संतुलन छिन्न-भिन्न हो जाने के कारण पर्यावरण सम्बन्धी चिन्ताजनक संस्थिति उत्पन्न हो गयी है। पर्यावरण असंतुलन की संस्थिति के प्रकटन में मनुष्य की अदूरदर्शिता, अविवेक, अज्ञानता, अशिक्षा एवं भौतिकवादी प्रवृत्ति ही बहुत हद तक जिम्मेदार है। यदि समय रहते पर्यावरण के प्रति सचेत न किया गया तो पर्यावरण से उत्पन्न होने वाली समस्याएँ इतनी भयावह दुर्भिक्ष एवं असमाधानित हो जायेगी कदाचित प्राणिजगत एवं मानव जगत का अस्तित्व ही समाप्त हो जाये। ऐसी ही विचारधारा को दृष्टि में रखकर पर्यावरण के प्रति चेतना एवं जन जागृति लाने हेतु पर्यावरण शिक्षा नामक एक अभिनव प्रवृत्ति का अभ्युदय शिक्षाविदों द्वारा किया गया।

पर्यावरण और मानव एक दूसरे के पूरक है। प्रकृति के बगैर मनुष्य की सार्थकता ही नहीं है। किन्तु आज का मानव औद्योगीकरण के जंजाल में फंसाकर स्वयं भी मशीन का एक निर्जीव पुर्जा बनकर रह गया है। उसे अपने पर्यावरण की शुद्धता का ध्यान भी नहीं रह गया है। चारों ओर से उसका जीवन समस्याग्रस्त होने लगा। अतः इस समय हमारे समस्त सबसे बड़ी चुनौती पर्यावरण को बचाने की है, इसलिये समाज में प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरणीय शिक्षा प्रदान कर पर्यावरण का महत्व बताया जाना चाहियें, क्योंकि यही हमारे अस्तित्व का आधार है।

यजुर्वेद के शान्तिपाठ में भी श्लोक के माध्यम से पर्यावरण में सन्तुलन का उल्लेख किया गया है: